ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

2022

HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे | *पूर्णांक* : 300

अनुदेश :

- उपान्त के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।
- **सभी** प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित सभी पर लघु टिप्पणियाँ लिखिए : 10×5=50

(क) प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरणी विशेषताएँ

(ख) देवनागरी लिपि की मानकता

(ग) अवधी का उद्भव और विकास

(घ) हिन्दी रंगशाला और नाटक का संक्षिप्त इतिहास

(ङ) प्रयोगवाद

Scanned with CamScanner

2. साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के उद्भव और विकास पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 50

अथवा

अपभ्रंश का उद्भव और विकास स्पष्ट करते हुए अपभ्रंश की व्याकरणी एवं शाब्दिक विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

3. भक्तिकाल की प्रवृत्तियों के आलोक में विचार कीजिए कि वस्तुतः भक्तिकाल हिन्दी साहित्येतिहास का 'स्वर्णयुग' है। 50

अथवा

छायावाद की प्रवृत्तियों के आलोक में विचार कीजिए कि छायावाद भारतीय स्वातंत्र्य चेतना का काव्य है।

खण्ड—ख

4. निम्नलिखित सभी पर लघु टिप्पणियाँ लिखिए : 10×5=50

(क) कबीर की समाज-दृष्टि

(ख) तुलसी की मर्यादा-दृष्टि

(ग) होरी के व्यक्तित्व में व्याप्त नैतिकता

(घ) 'अंधेर नगरी' का प्रतिपाद्य

(ङ) 'क्षद्धा-भक्ति' निबंध का केन्द्रीय भाव

5. 'भ्रमरगीत' की रचना के कारणों की विवेचना सोदाहरण कीजिए। 50

अथवा

भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में 'चंद्रगुप्त' नाटक की विवेचना कीजिए।

(*Continued*)

Scanned with CamScanner

6. "यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को भी साथ लेकर।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इस कथन के आलोक में उनके निबंध-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 50

अथवा

प्रस्तुत अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 25×2=50

(क) को भरिहै हरिके रितएँ, रितवै पुनि को, हरि जौं भरिहै।
उथपै तेहि को, जेहि रामु थपै, थपिहै तेहि को, हरि जौं टरिहै॥
तुलसी यहु जानि हिएँ अपने सपने नहि कालहु तें डरिहै।
कुमयाँ कछु हानि न औरनकीं, जौ पै जानकी-नाथु मया करिहै॥

(ख) "देखो, बन्धुवर सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी, मकरन्द-बिन्दु,
गरजता चरण-प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु,
दशदिक-समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर,
लख महाभाव-मंगल पदतल धँस रहा गर्व—
मानव के मन का असुर मन्द, हो रहा खर्व।"

★★★

Scanned with CamScanner